जयपुर में महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल सांइसेज एंड टेक्नॉलोजी के पांचवें दीक्षांत समारोह में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साइंसेज एवं टेक्नोलॉजी के पांचवें दीक्षांत समारोह में आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

आप सबकी कड़ी मेहनत और समर्पण के कारण आज राजस्थान के इस विश्वविद्यालय का नाम पूरे देश में अपनी सेवा के कारण गौरवमय हुआ है। मैं उन सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूं, जिन्होंने आज डिग्री प्राप्त की है। आप यह उपाधि प्राप्त करने के बाद जीवन के एक नये अध्याय की शुरुआत करेंगे।

आपके माता – पिता और यहाँ के डीन , प्रोफेसर का मार्गदर्शन ,शिक्षण एवं प्रशिक्षण का योगदान है;जिसके कारण आपको यह सफलता मिली है। मैं आप सबको शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूँ।

आज वे डीन एवं प्रोफेसर बहुत खुश होंगे, क्योंकि उनके द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थी एक मानवीय सेवा के पुनीत कार्य और समाज सेवा के लिए अपने आप को समर्पित करने जा रहे हैं।

वे माता– पिता भी धन्य हैं जिन्होंने आप जैसे पुत्र - पुत्रियों को जन्म दिया है। आपने मानवीय सेवा को संकल्प और लक्ष्य मान कर डॉक्टर और पैरा मेडिकल स्टाफ के रूप मे शिक्षण और प्रशिक्षण लेने का निर्णय लिया है ।

महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी ने बहुत कम समय में इतना बड़ा लक्ष्य हासिल किया है। वर्ष 2000 में इस विश्वविद्यालय की शुरुआत हुई थी।

डॉ एम एल स्वर्णकार एक ऐसे डॉक्टर थे जिन्होंने आईवीएफ के अंदर, उत्तर भारत में अपने नये रिसर्च और इनोवेशन से एक नई फैकल्टी शुरू की थी।

उन्होंने अनेक चुनौतियों के बावजूद इस मेडिकल कॉलेज की शुरुआत की। वे अपने लक्ष्य और संकल्प से हटे नहीं। वे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते गए। आजराजस्थान में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी ने मेडिकल साइंस और टेक्नोलॉजी के अंदर एक नये अध्याय की शुरुआत की है।

आज यह उत्तर भारत का सबसे बड़ा मेडिकल कॉलेज और यूनिवर्सिटी बन चुका है। अब मुझे खुशी होती है। जब मैं हॉस्पिटल का दौरा कर रहा था तो मुझे आर्थिक रूप से कमजोर कुछ लोग मिले। उन्होंने बताया कि हम यहां इलाज कराने आए हैं। उनमें से कुछ लोग मेरे संसदीय क्षेत्र के थे और कुछ लोग राजस्थान के अलग हिस्सों के थे। उन्होंने प्यार से कहा कि यहां इलाज अच्छा होता है और डॉक्टर भी अच्छे से व्यवहार करते हैं। यहां से कई मरीज ठीक होकर सकुशल गए हैं। कई ऐसे मरीज भी थे, जिन्हें लगता था कि अब हमारी जिन्दगी बचनी मुश्किल है, वे भी स्वस्थ होकर गए हैं।

हमारे डॉक्टर्स को जो संस्कार और कार्य संस्कृति दी गई है, वह मानवीय सेवा के लिए दी गई है। इसीलिए, मानवता की सेवा और कार्य संस्कृति के कारण उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना कोरोना काल में इस देश के लोगों को बचाने का काम किया। डॉक्टर्स हों, पैरा मेडिकल स्टाफ हों, अटेंडेंट हों या

सफाईकर्मी, हम उनके योगदान को नहीं भुला सकते हैं। जब हम कहते हैं कि डॉक्टर में ईश्वर का वास है तो उसको डॉक्टर्स की कार्य संस्कृति ने भारत में प्रमाणित कर दिया है।

आज महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी दुनिया की नयी टेक्नोलॉजी, विज्ञान और मेडिकल साइंस में आगे बढ़ रही है। अंग प्रत्यारोपण के मामले में, चाहे वह लीवर हो या किडनी हो, तमाम चीजें जो विज्ञान और टेक्नोलॉजी विकसित देशों में हैं, उन सबको इस मेडिकल यूनिवर्सिटी ने कड़ी मेहनत करके विकसित करने का काम किया है।

आज राजस्थान के लोगों को चिकित्सा सेवा के रूप में एक ऐसा संस्थान मिला है, जहां कैंसर, किडनी, लिवर जैसी हर बीमारी का इलाज आज महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी में हो रहा है।

पिछली बार जब डॉक्टर साहब मुझसे मिले थे तो मैंने आग्रह किया था कि हमें निजी मेडिकल कॉलेज सेक्टर के अंदर भी रिसर्च, इनोवेशन के केंद्र खोलने की आवश्यकता है। डॉक्टर साहब ने मेरी बात मान ली और उन्होंने कहा कि जब आप 12 तारीख को आएंगे तो निजी मेडिकल कॉलेज के रूप में हम जयपुर में बेहतरीन रिसर्च और इनोवेशन सेंटर खोलेंगे। वहां कैंसर और लिवर संबंधी बीमारियों पर रिसर्च होगी और आने वाले जो अन्य वैरिएंट हैं, उन पर भी रिसर्च होगी।

उनमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों को शिक्षण प्रशिक्षण के साथ एक रिसर्च और इनोवेशन के सेक्टर में भी काम करने का मौकामिलेगा । मुझे खुशी है कि जिस लक्ष्य

की ओर डॉक्टर स्वर्णकार चल रहे हैं, चाहे वह लक्ष्य रिसर्च, इनोवेशन या कैंसर के नये हॉस्पिटल खोलने का हो;आज एक हजार नये बेड के विस्तार का भी शिलान्यास हुआ है।

हम चाहते हैं कि राजस्थान का जयपुर मेडिकल टूरिज्म का सबसे बड़ा सेंटर बने। जो सरकारी संस्था है, उसमें निजी क्षेत्र का भी योगदान हो। हम सबकी भागीदारी और सबकी सामूहिकता के साथ जयपुर को एक मेडिकल हब बनाएंगे। मुझे आशा है कि हम इस संकल्प को सामूहिकता के साथ पूरा कर पाएंगे।

यहां कोई भी विद्यार्थी 18 से 20 साल की उम्र में आता है और 32 साल की उम्र में जाता है। यह कितना कठिन परिश्रम है कि आपने जीवन के उस महत्वपूर्ण क्षण को मानवीय सेवा के लिए, जिसमें आपका लक्ष्य है कि जो भी अस्वस्थ व्यक्ति मेरे पास आएगा, मैं उसको स्वस्थ करूंगा, उस संकल्प के साथ आप शिक्षण-प्रशिक्षण ले रहे हैं। आपने जिन्दगी के 12 साल गुजारे हैं। आपको अभी और भी गुजारने हैं।

विज्ञान और टेक्नोलोजी गतिशील होते हैं । यदि वह विराम हो गए तो समाप्त हो जाएंगे । मुझे सर्वश्रेष्ठ डॉक्टर बनना है। मुझे नए रिसर्च करने हैं, आपको इस लक्ष्य के साथ निकलना है। आने वाले समय में महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले विद्यार्थी का विज्ञान और टेक्नोलॉजीमें रिसर्च पेपर निकले, जिसको दुनिया पढ़े। यह हमारा संकल्प होना चाहिए।

मानवता की सेवा और संस्कार हमारी कार्य संस्कृति में है। आप मानवीय संवेदना के साथ मरीज के जीवन के साथ जुड़ें। आप जितनी बीमारी का इलाज

करेंगे, उतनी मानवीय संवेदना के साथ जुड़ेंगे। उससे आप उसको जल्दी स्वस्थ और सकुशल करेंगे।

हमारी ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा बेहतर हो, इसलिए आने वाले समय में डिजिटलयुग में हम दूर दराज़ के गाँव में बैठ कर भी अपने डिजिटल तंत्र या टेली मेडिसिन सेवा से उसको बेहतर कर सकते हैं। आज युग परिवर्तन की ओर बढ़ रहा है।आर्टीफिशियलइंटैलीजेन्स का युग है, डिजिटल युग है।उस युग के साथ भारत की संस्कृति, संस्कारों के अंदर संवेदना और मानवीय सेवा के साथ जुड़ने के संकल्प को नहीं छोड़ना है।

इसीलिए मुझे आशा है कि आज आप इस लक्ष्य के साथ यहां से निकलेंगे कि सेवा मेरा धर्म है, मानवता की सेवा करने जैसा पुण्य काम मुझे भगवान ने दिया है। मैं सबको स्वस्थ रख सकूं, सभी स्वस्थ रहें। मेरा दूर दराज़ के लोगों से भी संपर्क रहे। अनजानी बीमारी का पता न हो तो उसका ठीक से मार्गदर्शन करना, उससे जुड़ना और सबको स्वस्थ रखना है। आप जैसे नौजवानों के कारण ही एक दिन हमारा यह संकल्प पूरा होगा।

हम इस पेशे को मानव सेवा का पेशा मानकर, इस उपाधि को प्राप्त करके यहां से निकलें और सभी को स्वस्थ रखने के संकल्प के साथ निकलें।

हमारे सपने बहुत बड़े हैं, उन सपनों को पूरा करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति और संकल्प के साथ आगे बढ़ना है। महात्मा गांधी मेडिकल यूनिवर्सिटी देश ही

नहीं, बल्कि पूरे विश्व की सबसे बेहतरीन मेडिकल यूनिवर्सिटी बने, ये आपका लक्ष्य होना चाहिए।

इन सपनों को पूरा करने के लिए जब आप उन लक्ष्यों की ओर बढ़ेंगे, तो वे सपने भी पूरे होंगे।